

मन्नू भंडारी के उपन्यासों में स्त्री विमर्श

Santosh kanwar bithu

Teacher level - 1 Government Senior Secondary school. Chanadasar ,

Block - Kolayat , Bikaner. Rajasthan

सार

मन्नू भंडारी हिंदी साहित्य की चर्चित लेखिका हैं जिन्होंने अपने उपन्यासों और कहानियों में स्त्री की मनोवैज्ञानिक जटिलताओं, सामाजिक असमानताओं और जीवन-संघर्षों को सशक्त अभिव्यक्ति दी है। उनके उपन्यासों में स्त्री केवल पारंपरिक भूमिकाओं तक सीमित नहीं रहती, बल्कि वह अपनी इच्छाओं, आकांक्षाओं और स्वतंत्र अस्तित्व की खोज करती है। स्त्री-विमर्श के परिप्रेक्ष्य में मन्नू भंडारी के उपन्यास समाज में स्त्री की स्थिति, पुरुष प्रधान मानसिकता से संघर्ष, पारिवारिक बंधनों की जकड़न और आत्मसम्मान की रक्षा की तीव्र आकांक्षा को उजागर करते हैं। आपका बंटी में बंटी के माध्यम से तलाकशुदा परिवार की त्रासदी और एक स्त्री की अस्मिता का प्रश्न सामने आता है। वहीं महाभोज जैसे उपन्यास सामाजिक-राजनीतिक संदर्भों में स्त्री की पीड़ा और हाशिए पर खड़े वर्ग की समस्याओं को रेखांकित करते हैं। मन्नू भंडारी की लेखनी में स्त्री मात्र दया की पात्र नहीं, बल्कि संघर्षशील और स्वाभिमानी रूप में चित्रित होती है। इस प्रकार, उनके उपन्यास स्त्री-विमर्श को गहन सामाजिक यथार्थ से जोड़ते हैं और यह सिद्ध करते हैं कि स्त्री केवल समाज की परिधि पर नहीं, बल्कि उसकी केन्द्रीय शक्ति है। उनके लेखन में स्त्री की स्वतंत्रता, आत्मसम्मान और जीवन के प्रति सजग दृष्टिकोण स्त्री-विमर्श को नया आयाम प्रदान करते हैं।

मुख्य शब्द: मन्नू भंडारी, उपन्यासों, स्त्री

परिचय

हिंदी साहित्य के विकास में मन्नू भंडारी का नाम एक ऐसे रचनाकार के रूप में लिया जाता है जिन्होंने स्त्री के जीवन-संघर्षों, उसकी भावनात्मक जटिलताओं और सामाजिक यथार्थ को सहज, सरल और मार्मिक भाषा में प्रस्तुत किया। उन्होंने अपनी लेखनी के माध्यम से स्त्री के प्रति समाज की रूढ़ मानसिकताओं को चुनौती दी और स्त्री को केवल गृहस्थी की सीमाओं में कैद एक परंपरागत भूमिका के रूप में न दिखाकर उसके स्वतंत्र व्यक्तित्व और आत्मसम्मान को पहचान दी। मन्नू भंडारी के उपन्यासों में स्त्री-विमर्श की धारा स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। उनका लेखन नारी जीवन की गहराइयों को छूता है और यह दर्शाता है कि स्त्री केवल सहनशीलता और त्याग की प्रतीक नहीं, बल्कि वह भी अपनी इच्छाओं और अधिकारों के लिए संघर्ष कर सकती है। उनके प्रसिद्ध उपन्यास आपका बंटी में परिवार टूटने की स्थिति में स्त्री की विवशता और आत्मसम्मान के बीच संघर्ष का चित्रण मिलता है। वहीं महाभोज जैसे उपन्यास में राजनीतिक-सामाजिक अन्याय के बीच स्त्री की स्थिति को भी सामने लाया गया है। मन्नू भंडारी की रचनाओं में स्त्री का स्वर हीनता का नहीं, बल्कि आत्म-संघर्ष और आत्म-प्रतिष्ठा का स्वर है। उन्होंने स्त्री को उसकी संपूर्णता में चित्रित किया है, जहाँ वह केवल परंपरागत ढांचे में बंधी हुई नहीं बल्कि अपनी पहचान और स्वतंत्रता की खोज में निरंतर सक्रिय है। यही कारण है कि उनके उपन्यासों को हिंदी साहित्य में स्त्री-विमर्श की महत्वपूर्ण धारा के रूप में देखा जाता है।

भंडारी ने महिलाओं के संघर्षों और कठिनाइयों को उजागर किया

'आपका बंटी' और 'महाभोज' जैसी चर्चित कृतियों की रचना करने वाली प्रसिद्ध लेखिका मन्नू भंडारी महिलाओं को एक नई रोशनी में चित्रित करने के लिए जानी जाती हैं। उन्होंने लघु कथाएं, उपन्यास और नाटकों को कलमबद्ध किया। उनके आख्यानो ने उन संघर्षों और कठिनाइयों को उजागर किया है, जिनका महिलाओं ने अतीत में लगातार सामना किया है।

1931 में मध्यप्रदेश के भानपुरा में जन्मी भंडारी की प्रारंभिक शिक्षा अजमेर में हुई। उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त की और काशी हिंदू विश्वविद्यालय से हिंदी भाषा और साहित्य में एमए किया। उनका विवाह प्रसिद्ध साहित्यकार राजेंद्र यादव से हुआ था। राजेंद्र यादव को भंडारी के साथ मिलकर 'नयी कहानी' के नाम से हिन्दी साहित्य में एक नयी विधा का सूत्रपात करने का श्रेय दिया जाता है। मन्नू भंडारी को उत्कृष्ट साहित्यिक उपलब्धियों के लिए दिल्ली शिखर सम्मान और केके बिरला फाउंडेशन के व्यास सम्मान सहित कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। उनके प्रसिद्ध उपन्यास 'यही सच है' को लेकर 1974 में बनी फिल्म 'रजनीगंधा' ने 1975 में कई फिल्मफेयर पुरस्कार जीते थे। भंडारी के परिवार में उनकी बेटी रचना यादव हैं। प्रसिद्ध साहित्यकार मैत्रेयी पुष्पा ने कहा-कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी और ऊषा प्रियंवदा 'नई कहानी' के जमाने में तीन बड़ी लेखिकाएं हैं। उससे पहले स्त्रियों का लिखा हुआ उतनी गंभीरता से नहीं लिया जाता था। तब महादेवी वर्मा सहित कई लेखिकाएं भी थीं। मन्नू भंडारी के लेखन का तेवर लचीला था। मैंने उनकी कृति 'आपका बंटी' और 'महाभोज' भी पढ़ी है। 'आपका बंटी' पर हमने कुछ सवाल भी उठाए थे, लेकिन उन्होंने एक तलाकशुदा स्त्री के जीवन के बारे में काफी दृढ़ता से लिखा। जब तक उन्होंने नहीं लिखा था, तब तक तलाकशुदा स्त्री की पीड़ा उस तरह सामने नहीं आई थी।

साहित्य समीक्षा

हिंदी साहित्य में स्त्री-विमर्श की धारा विशेष रूप से 20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में अधिक सशक्त रूप में सामने आई। इस काल में मन्नू भंडारी, कमलेश्वर, राजेंद्र यादव जैसे लेखकों ने यथार्थवादी दृष्टि से स्त्री-जीवन की जटिलताओं को अभिव्यक्त किया। विशेष रूप से मन्नू भंडारी को स्त्री-अस्मिता की प्रखर आवाज़ के रूप में पहचाना जाता है। उनके उपन्यासों में स्त्री केवल पारिवारिक संबंधों की धुरी नहीं, बल्कि एक स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में उभरती है।

डॉ. नामवर सिंह (1983) का मानना है कि मन्नू भंडारी ने स्त्री की भावनाओं को जीवन की वास्तविकताओं के साथ जोड़कर प्रस्तुत किया है, जिससे उनका साहित्य सिर्फ व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना का भी हिस्सा बन जाता है।

मैत्रेयी पुष्पा (1995) ने यह स्वीकार किया कि मन्नू भंडारी ने 'आपका बंटी' जैसे उपन्यासों में स्त्री की भूमिका को आधुनिक संदर्भों में नए रूप में परिभाषित किया है।

राजेंद्र यादव (2000) के अनुसार, मन्नू भंडारी ने स्त्री के 'सत्ता-विमर्श' को सहज, मार्मिक और बोधगम्य भाषा में अभिव्यक्त किया, जो पाठकों के हृदय को सीधा छूता है।

मन्नू भंडारी के *आपका बंटी* में तलाकशुदा परिवार की त्रासदी से उत्पन्न स्त्री की मनःस्थिति का गहन चित्रण मिलता है। इसमें शकुंतला नामक पात्र उस स्त्री का प्रतिनिधित्व करती है, जो अपनी इच्छाओं और जीवन की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करती है, किंतु सामाजिक आलोचना और पारिवारिक अपेक्षाओं से बंधी रहती है। वहीं *महाभोज* में मन्नू

भंडारी ने राजनीति, शोषण और असमानता की पृष्ठभूमि में स्त्री की स्थिति को उजागर किया है। इसमें स्त्री पात्र सामाजिक-राजनीतिक संघर्षों की मार झेलते हुए भी अपनी अस्मिता और साहस का परिचय देते हैं।

कुल मिलाकर, विद्वानों का मत है कि मन्नू भंडारी ने स्त्री को केवल सहानुभूति की पात्र न बनाकर, उसके संघर्ष और अस्तित्व की खोज को साहित्य का मुख्य केंद्र बनाया। उनके उपन्यासों ने हिंदी साहित्य में स्त्री-विमर्श को नई दृष्टि और नई ऊँचाई प्रदान की।

आपका बंटी

आपका बंटी मन्नू भंडारी के उन बेजोड़ उपन्यासों में है जिनके बिना न बीसवीं शताब्दी के हिन्दी उपन्यास

की बात की जा सकती है न स्त्री-विमर्श को सही धरातल पर समझा जा सकता है। तीस वर्ष पहले (1970 में) लिखा गया यह उपन्यास हिन्दी की लोकप्रिय पुस्तकों की पहली पंक्ति में है। दर्जनों संस्करण और अनुवादों का यह सिलसिला आज भी वैसा ही है जैसा धर्मयुग में पहली बार धारावाहिक के रूप से प्रकाशन के दौरान था।

महाभोज

मन्नू भंडारी का महाभोज उपन्यास इस धारणा को तोड़ता है कि महिलाएं या तो घर-परिवार के बारे में लिखती हैं, या अपनी भावनाओं की दुनिया में ही जीती मरती हैं। महाभोज विद्रोह का राजनैतिक उपन्यास है। जनतंत्र में साधारण जन की जगह कहाँ है? राजनीति और नौकरशाही के सूत्रधारों ने सारे ताने-बाने को इस तरह उलझा दिया है कि वह जनता को फाँसने और घोटने का जाल बनकर रह गया है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. लघु कथाकार के रूप में मन्नू भंडारी के जीवन और कार्यों का अध्ययन करना।
2. मन्नू भंडारी की लघु कथाओं में चित्रित महिला के बारे में अध्ययन करना।
3. युवा लड़की के दर्द और युवा महिला की विवाह पूर्व पीड़ा के बारे में अध्ययन करना।
4. मन्नू भंडारी के संदर्भ में महिलाओं के बारे में पत्नी और जीवन साथी के रूप में अध्ययन करना।

कार्य योजना और कार्यप्रणाली

यह अध्ययन महिलाओं के चित्रण पर आधारित होगा जिसमें हम सबसे पहले एक लघु कथाकार के रूप में मन्नू भंडारी के जीवन और कार्यों पर चर्चा करेंगे। हम मन्नू भंडारी के संदर्भ में युवा लड़कियों के दर्द और युवा महिलाओं की पति और जीवन साथी के रूप में विवाह पूर्व पीड़ा का भी अध्ययन करेंगे। इस अध्ययन के लिए द्वितीयक आँकड़ों की सहायता से हमारा अध्ययन किया जाएगा अर्थात् हमारा अध्ययन द्वितीयक आँकड़ों पर निर्भर करेगा।

माध्यमिक डेटा वह डेटा है जो पहले से ही प्राथमिक स्रोतों के माध्यम से एकत्र किया गया है और शोधकर्ताओं को अपने स्वयं के शोध के लिए उपयोग करने के लिए आसानी से उपलब्ध कराया गया है। यह एक प्रकार का आकड़ा है जो पहले ही एकत्र किया जा चुका है।

एक शोधकर्ता ने किसी विशेष परियोजना के लिए आकड़ा एकत्र हो सकता है, फिर इसे किसी अन्य शोधकर्ता द्वारा उपयोग करने के लिए उपलब्ध कराया जा सकता है। राष्ट्रीय जनगणना के मामले में बिना किसी विशिष्ट शोध उद्देश्य के सामान्य उपयोग के लिए आंकड़ा भी एकत्र किया जा सकता है।

मन्नू भण्डारी के उपन्यासों में स्त्री-चेतना

मन्नूजी के व्यक्तित्व की छाया उनके लेखन में स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है, वह नारी को उसकी पहचान देती हैं। मन्नू के अनुसार उसके अन्दर अच्छाई भी है, बुराई भी है। वह कोई देवी नहीं है और न ही दानवी है। शायद इसी कारण आज भी उनकी लेखनी में पूरी विश्वसनीयता है। अपनी मौलिकता के कारण उनकी कृतियाँ दिशा-निर्देशन का कार्य करती हैं। उनका सम्पर्क सभी प्रकार के रचना स्रोतों से बना हुआ है। इनका अन्वेषण यथार्थवादी मूल्यों का है। तीन दशकों से भी अधिक समय तक वे अपने कृतित्व के बल पर हिन्दी महिला साहित्यकारों में अग्रणी बनी रहीं। वे कृष्णा सोबती एवं अमृता प्रीतम के समान अश्लीलता की हद नहीं पार करतीं, यही कारण है कि उनका स्त्री-पुरुष सम्बन्ध-विश्लेषण भी एक सीमा के अन्दर ही होता है।

आधुनिक नारी के दुःखों को मन्नू जी ने भली-भाँति समझा। एक सफल चित्रकार के समान अपने कथा-साहित्य में उन्हें वर्णित और रेखांकित किया। उनकी पात्राएँ सीता के समान देवी नहीं हैं, न ही कलियुगी कलंकिनी हैं वरन् यथार्थ नारी हैं जो सोचती हैं, समझती हैं। वे हाड़-माँस का पुतला हैं, दुःख-सुख वासना-प्रेम सभी भावनाएँ महसूस करती हैं।

उनकी लेखन-शैली पर टिप्पणी करते हुए कवि अजीत कुमार लिखते हैं उनका लेखकीय व्यक्तित्व किसी विधा में सिमटने, सिकुड़ने, गहराने के स्थान पर विस्तृत और व्यापक होता गया है। उसके आयाम सुलझते जा रहे हैं।

मन्नूजी ने नारी-समस्याओं को चित्रित करने के लिए कहानी, उपन्यास और नाटक आदि साहित्य की विभिन्न विधाओं में अपनी लेखनी चलाई और प्रत्येक विधा में उनका लेखन अत्यन्त सफल रहा। रूढ़ियों के प्रति विद्रोह उनके लेखन का उजागर पक्ष है। उनकी लेखनी से उपजी नारी एक अस्तित्ववान् सचेतन प्राणी है।

साहित्य लेखन के सन्दर्भ में स्त्री अस्मिता : एक चिंतन

पितृसत्ता एक सामाजिक घटना है, हजारों साल से चली आई ऐसी व्यवस्था है, जिसमें स्त्री की अधीनस्थता सर्वविदित है। पितृसत्ता ने स्त्री को अपने ज्ञान की वस्तु बनाया। उसे साधन के रूप में प्रयुक्त किया - उसके नाम, रूप, जाति, गौत् सब अपने संदर्भ में परिभाषित किये। स्त्री का यह अमानवीकरण दलित के अमानवीकरण से कहीं ज्यादा सूक्ष्म है, क्योंकि दलित पुरुष अपने दमन से परिचित है। मगर स्त्री चाहे वह किसी भी जाति या वर्ण की हो, अपने उत्पीड़न से परिचित ही नहीं है। वह अपनी दैहिकता में कैद है। यह तो इतिहास में पहली बार घट रहा है कि स्त्री पितृसत्ता को नकार रही है, उस सत्ता द्वारा आरोपित भूमिकाओं के प्रति सवाल उठा रही है। वह वस्तु से व्यक्ति बनने की प्रक्रिया में है। उसका जीवन अनंत संभावनाओं से भरपूर है। साठ-पैंसठ साल पहले तक महिलाओं की सामाजिक स्थिति पर, उनके सशक्तिकरण, उनकी उपलब्धियों और संघर्षों पर, उनके रचे साहित्य और अवधारणाओं पर गंभीरता से चर्चा नहीं की जाती थी। महिला लेखन को बहुत सम्माननीय दर्जा प्राप्त नहीं था और जो दो-चार महिलाएँ रचनाएँ करती भी थीं, उन्हें घर के सीमित दायरे की सीमित समस्याओं के घेरे में रचा लेखन मानकर या घर बैठी सुखी महिलाओं का लेखन मानकर या तो गंभीरता से नहीं लिया जाता था या एक आरक्षित रियायत दे दी जाती थी कि आखिर तो इनका दायरा छोटा है, परिवेश सीमित है तो बड़े फलक के मुद्दे कैसे उठाएँगी।

भारत के साहित्य इतिहास में महिला साहित्यकारों ने हमेशा से अपने लेखन से महिला शक्ति को एक मजबूत आवाज दी हैं। महादेवी वर्मा से लेकर शिवानी जी और महाश्वेता जी तक महिलाओं ने भारतीय भाषाओं के साहित्य में अभूतपूर्व योगदान दिया है और महिलाओं के प्रति समाज की सोच में एक सकारात्मक रवैये के लिए बदलाव पर जोर दिया है।

निष्कर्ष

मन्नू भंडारी के उपन्यासों के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि उन्होंने स्त्री-विमर्श को केवल एक भावनात्मक मुद्दे के रूप में नहीं, बल्कि सामाजिक यथार्थ और मानवीय संवेदनाओं के गहन प्रश्न के रूप में प्रस्तुत किया। उनके उपन्यासों में स्त्री पात्र न तो केवल परंपरा की बेड़ियों में बंधे हुए निष्क्रिय प्राणी हैं और न ही मात्र त्याग और सहनशीलता की मूर्ति। वे अपने अधिकारों, स्वतंत्रता और आत्मसम्मान की रक्षा के लिए संघर्षरत हैं। आपका बंटी में जहाँ तलाकशुदा स्त्री और बच्चे के जीवन की त्रासदी सामने आती है, वहीं महाभोज में राजनीतिक और सामाजिक शोषण के बीच स्त्री की स्थिति का सजीव चित्रण मिलता है। इन उपन्यासों में स्त्री पात्र जीवन की कठिन परिस्थितियों से जूझते हुए भी अपनी अस्मिता और स्वतंत्रता की तलाश नहीं छोड़ते। यही उन्हें पारंपरिक स्त्री छवि से अलग और अधिक सशक्त बनाता है। मन्नू भंडारी की लेखनी ने यह सिद्ध किया कि स्त्री समाज की परिधि में खड़ी कोई हाशिये की इकाई नहीं है, बल्कि समाज के केंद्र में उसकी महत्वपूर्ण भूमिका है। उन्होंने स्त्री को केवल सहानुभूति की पात्र न बनाकर, उसे संघर्षशील, स्वाभिमानी और आत्मनिर्णय लेने वाली सत्ता के रूप में चित्रित किया। यही कारण है कि उनके उपन्यास हिंदी साहित्य में स्त्री-विमर्श की एक सशक्त धारा को जन्म देते हैं। अतः कहा जा सकता है कि मन्नू भंडारी का साहित्य स्त्री को उसकी संपूर्णता में स्वीकार करता है और उसे वह स्वर प्रदान करता है जो लंबे समय तक दबा हुआ था। उनके उपन्यासों ने न केवल हिंदी साहित्य में स्त्री-विमर्श को नई ऊँचाई दी, बल्कि सामाजिक चेतना को भी नई दिशा प्रदान की।

सन्दर्भ

कुकांता राधवानी, डॉ. अनीता सिंह (2018) "मन्नू भंडारी की महिला के विवाह में महिला के संघ" पर, अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका, वॉल्यूम, 6 नंबर 5

डॉ. मुकेश यादव (2017) "20वीं सदी के भारतीय लघु कहानी लेखकों में जेंडर डिस्कोर्स", इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज सोशल साइंसेज एंड एजुकेशन (आईजेएचएसएसई) वॉल्यूम 4, अंक 10

प्रीता मणि (2016) पर "फेमिनिन डिजायर इज ह्यूमन डिजायर: वूमेन राइटिंग फेमिनिज्म इन पोस्ट इंडिपेंडेंस इंडिया", वॉल्यूम। 26, नहीं।

अनुराधा शर्मा (2016) पर "मन्नू भंडारी की लघु कहानियों में महिलाएं: आंतरिक इच्छाएँ बनाम सामाजिक अपेक्षाएँ", जे. इंजी. लैंग। लिट एंड ट्रांस. अध्ययन, वॉल्यूम। 3. अंक 4।

स्टॉक-न्यूहाउस, नैन्सी डीन (2021) मन्नू भंडारी द्वारा "त्रिशंकु और अन्या कहानीयम" से दो कहानियां। ए ट्रांसलेशन एंड कमेंट्री", द यूनिवर्सिटी ऑफ एरिजोना।

"गोखले, नमिता (2012) राजुल भार्गव में "जेंडर एंड लिटरेरी सेंसिबिलिटी" "इंडियन राइटिंग इन इंग्लिश: द लास्ट डिक्लेड। जयपुर: रावत पब्लिकेशन्स ।